-: उपसंहार :-

साहित्य समाज का एक ऐसा प्रतिबिम्ब है, समाज का मार्गदर्शक है तथा यह एक तरह से समाज का लेखा-जोखा किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी हमें हासिल करनी हो तो उसके साहित्य से वो हमें हासिल हो सकती है। साहित्य लोकजीवन का एक अभिन्न अंग माना जाता है। किसी भी काल के साहित्य से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहन-सहन, खान-पान व अन्य गतिविधियों के संदर्भ में पता चलता है तथा समाज साहित्य को प्रभावित भी करता है और ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। साहित्य का समाज से उसी तरह का संबंध होता है, जिस तरह से आत्मा का शरीर के साथ संबंध होता है अर्थात् साहित्य रूपी शरीर की एक आत्मा है जो साहित्य अजर-अमर है। महान विद्वान योननागोची के अनुसार 'समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नहीं हो सकता।'

साहित्य समाज का दर्पण है। किसी भी देश या समाज को कविताओं या साहित्यकारों द्वारा जितना समझा जा सकता है उतना अन्य द्वारा नहीं। तभी तो कहा गया है कि -"अपारे काव्य संसारे कविर्रेव प्रजापतिः। यथास्मै रोचते विश्व तथास्मै परिकल्पते।" कथा तथा उपन्यास हिन्दी साहित्य की गद्यविधाओं में सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। ये दोनों ही मानव समाज के वास्तविक जीवन मूल्यों को स्पर्श करके उच्च जीवनादर्शों को अभिव्यक्ति करते हैं, दरसल उसका एक कारण यह भी है कि साहित्यकार समाज में व्याप्त विद्रूपताओं, मान्यताओं,रूढ़ियों एवं मानवजीवन को स्पर्श करने वाली समस्याओं को अपने लेखन का विषय बनाता है। जब तक वह जीवन के संघर्षों और सत्य से गुजरता नहीं तब तक वह जीवंत साहित्य का सृजन नहीं कर सकता, अर्थात् प्रत्येक युग में साहित्यकार युगीन चेतना के ताने-बाने से जुड़ा रहता है। उन तारों की बुनावट एवं झंझनाहट से प्रभावित होकर वह जीवन की ऐसी तस्वीर का निर्माण करता है जो अधिक कलात्मक, रोचक एवं यथार्थ होती है, जो कि पाठक को अपनी तरफ आकर्षित करती रहती है। कोई भी साहित्यकार परिवेश से कटकर साहित्य की रचना नहीं कर सकता। परिवेश निरन्तर परिवर्तनशील है, इसमें स्थिरता नहीं होती। परिवेश का जो पक्ष लेखक की चेतना को झकझोरता है और जिस पर लेखक चिन्तन-मनन

करता है, वही पक्ष उसके साहित्य का अंग बन जाता है। जिस परिवेश में लेखक रहता है उसे भेगता है, जो उसे चेतना शक्ति देता है उसी की अभिव्यक्ति वह साहित्य में करता है।

यह विषय अनुसंधान के क्षेत्र में बिल्कुल नया एवं मौलिक है। भारतवर्ष के बड़े भू-भाग में सामाजिक जीवन-शैली, वेश-भूषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, लोक-संस्कृति एवं मानव मूल्यों को स्पष्ट करने वाली समस्याओं को केन्द्र में रखकर अनेक भारतीय भाषाओं में लेखन कार्य हुआ है। हिंदी साहित्य में नारी पात्रों पर आधारित अनेक कविता, आत्मकथा, आलोचना, मीडिया, उपन्यास एवं कहानियाँ दलित-गैर दलित साहित्यकारों द्वारा लिखा गया है। मेरे शोधकार्य का मुख्य प्रयोजन यही है कि "श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन"

हिन्दी कथा-साहित्य ने अपनी विकास यात्रा के लगभग सवा सौ वर्ष पूर्ण किए हैं। इन वर्षों की यात्रा में कथा और साहित्य ने कभी तो मनाव की मनः स्थितियों को उद्देश्य माना तो कभी सामाजिक चेतना के यथार्थ चित्रण का अनुभव किया, कभी युग जीवन के मूल्यों का, कभी सांस्कृतिक मूल्यो का, तो कभी आंचलिकता का, कभी मानव मन की अंतरंगता को स्वर देने का प्रयत्न किया है। किन्तु सम्यक रूप से विचार करने पर प्रतीत होता है कि आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य का केन्द्रीय विषय लोक-संस्कृति की कामना करना है। इसमें मानव जीवन, समाज एवं संस्कृति से जोड़ने वाली बातें, औपन्यासिक रूप धारण करके सामने आती है। अतः कथा-साहित्य की व्याख्या या परिभाषा भी मानव-जीवन, समाज एवं संस्कृति से जोड़कर होनी चाहिए। संसार एक मंच है, जिस पर अभिनय करने वाले स्त्री एवं पुरुष दोनों हैं। देश के निर्माण में पुरुषों के साथ स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लेकिन आज़ादी प्राप्त होने के बाद भी स्त्रियों की स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं आया। अर्थात् स्त्रियों को वह आज़ादी नहीं मिल सकी जिसका सपना संविधान देता है। उन स्त्रियों को साहित्य में बिल्कुल बेचारा बनाकर रख दिया गया। अर्थात् कभी-कभी उनका चित्रण साहित्य में करते हैं। इसी को आधार बनाकर शोध किया गया है।

आधारपूर्ण एवं विश्वसनीय सामग्री का संकलन अध्यान की आधारभूत शिला है, उपलब्ध पाठ-सामग्री कितनी पूर्ण एवं प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक होती है, उतना ही अध्ययन ठोस और उच्चस्तरीय बनता है। इसके लिए मैंने अलग-अलग प्रकाशनों की सूची को देखा और मेरे साथ ही अपने कार्य के लिए उपयोगी रचनाओं से संबंधित रचनाओं के लिए पत्राचार भी किए हैं।

श्यौराज सिंह बेचैन हिन्दी के एक ऐसे बिरले साहित्यकार माने जाते हैं जिनका मानना है कि साहित्यकार को सिर्फ उसके कृतित्व के आधार पर ही नहीं, प्रायः उसके व्यक्तित्व के निष्कर्ष पर भी उसे कसना आवश्यक है। वे कहते हैं कि मेरा साहित्य आत्मकथात्मक है जो मैंने सहा और देखा है उसी की छाया मैंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। कवि या लेखक को, कवि या लेखक होने से पूर्व एक अच्छा इंसान होना चाहिए। श्यौराज सिंह बेचैन जी तो यहाँ तक कहते हैं कि एक अच्छा इंसान ही एक अच्छा कवि या लेखक हो सकता है क्योंकि उसके अंदर सकारात्मक सामाजिक सद्भावना होती है।

साहित्य और कला के क्षेत्र में एक विचित्र सी परंपरा प्रवाहित हो रही है कि जो लेखक वैयक्तिक रूप से औरों के लिए जितना ही रहस्यमय होगा, औरों से कटकर रहेगा, औरों से कुछ भिन्न होने का स्वांग रचता होगा, तो वह एक महान रचनाकार कहलाएगा और इसके नतीजतन कुछ तथाकथित महान साहित्यकारों में साधारण मनुष्यों जैसे सद्गुण विद्यमान नहीं होते मानवीय सद्भावनाओं से वे अनभिज्ञ होते हैं। इस गलत अवधारणा या भ्रांति के मूल में यह कारण अवश्य रहा होगा कि समयानुसार अति विशिष्टता का बोध आरोपित करने की लिप्सा में यह अपने आस-पास एक ऐसा प्रपंच निर्धारित करते हैं कि लोग उस छलावे में फसते चले जाते हैं, अन्यथा प्रेमचन्द, रेणु, नागार्जुन, भीष्म साहनी को तो ऐसे करने की आवश्यकता ही नहीं थी। प्रेमचंद, रेणु जैसे साहित्यकार अपने समय के बिरले साहित्यकार ही होते हैं जो कि भविष्य में अपनी महत्ता को बनाए रखते हैं और हमारे आधुनिक युग के आलोच्य लेखक श्यौराज सिंह बेचैन भी ऐसे ही बिरले साहित्यकारों में से एक हैं। काव्य के पठन-पाठन से मनुष्य को सांसारिक अनुभव प्राप्त होता है, जो उसे अन्य साधनों से प्राप्त नहीं हो सकता। काव्य से लोक-व्यवहार पाठक ही नहीं सीखता है, वरन काव्य की सर्जना करने

वाला कवि भी इससे लोक व्यवहार अर्जित करता है, क्योंकि कवि या लेखक जो भी सृजन करता है, उसको पहले जीता है। जीता नही, तो अनुभव अवश्य करता है।

"श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन" शोध-विषय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए श्यौराज सिंह 'बेचैन' के कथा-साहित्य में नारी पात्रों पर केन्द्रित कहानी, आत्मकथा, कविता, निबंधों, मीडिया एवं उपन्यासों की चर्चा करना उचित था। क्योंकि विषय की व्यापकता उनकी उपलब्धियों से जुड़ती है। इस विषय पर केन्द्रित उपन्यासों में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक, जातीय, भाषाई, रहन-सहन, उनमें प्रचलित मान्यताएं, दंत कथाएं शैली विज्ञान की अवधारणा सहज विभाजन की स्थिति, आजादी से पूर्व तथा पश्चात् की स्थिति तथा भारतीय दलितों के प्रति कड़वाहट क्यों? हमारा अपने दलित बहनों भाइयों के प्रति क्यों चौकन्ना होना? एवं साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिलना तथा समाज के स्वरूप एवं आवश्यकता, व्यक्ति तथा समाज के अंतः संबंध, व्यक्ति का समाज के प्रति दायित्व, समाज का व्यक्ति के प्रति दायित्व तथा सामाजिक सद्भावना के तत्व जैसे- पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, भाषाई आदि तत्व उजागर होते हैं। साहित्य मे इन परिस्थितियों के अंतर्गत पारिवारिक संघर्ष, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाई, राष्ट्र के प्रति सद्भावना के साथ-साथ सामाजिक जन-जीवन का चित्रण श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी के साहित्य में उपलब्ध होता है।

हिन्दी साहित्य पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि हिंदी के कथा साहित्य में नारी पात्रों को बहुत ही अल्पसाहित्यमें प्रदर्शित किया गया है। साहित्यकार ने अपनी रचनाओं के द्वारा स्त्रियों का मूल्यांकन स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। श्यौराज सिंह के पूर्व के साहित्यकारों का साहित्य इस शोध को पूर्ण करने में हमारे लिए काफी मददगार साबित हुआ है। क्योंकि तुलनात्मक दृष्टि किसी भी शोध को और महत्वपूर्ण बनाती है।

साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन प्रत्येक कृति में कहींकहीं देखने को -ना-मिल ही जाती है। परन्तु श्यौराज सिंह जी ने अपने साहित्य में नारी, नारी चेतना एवं नारी संघर्ष को उजागर किया है। इस विषय में पुरुषिके बीच टकराव के कारण तथा दोनों के बीच आपसी मेल को यथार्थ रूप से दर्शाने

का प्रयत्न किया है तथा इस विषय में पारिवारिक भावों एवं सामाजिक स्वरूप को हमने दर्शाने का प्रयत्न भी शोधप्रबंध में करने की भरपूर - कोशिश की है। इस शोध में नारी के मन में जिक सौसा हार्द को करीब से प्रबंध को अधिक रोचक और -देखने का जो अनुभव है वह इस शोध सत्यनिष्ठा बनाता है। जिसका मैंने पुष्टि तथ्यों के आधार पर सफल प्रयत्न किया है।

नारी विमर्श की आज प्रासंगिकता बनी हुई है। जब तक सभी महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग नही हो जाती तब तक यह विमर्श अपूर्ण है। उसमें भी सवर्ण महिलाओं की अपेक्षा दलित महिलाओं में विमर्श की रोशनी की जरूरत अभी भी बनी हुई है। नारी का परम्परा से शोषण होता रहा है। नारी विमर्श लेखन से नारी मुक्ति की कामना की जाती है।मुख्य धारा की महिला लेखिकाएं एवं दलित महिला लेखिकाओं का लेखन उपलब्ध होता है।नारी जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास हो रहा है। मानवीय अधिकारों से परिचित होती हुई वर्तमान भूमिका के पद पर अग्रसरित हो रही है। यह श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य से निष्पन्न होता है।

आलोच्य शोध ग्रंथ के लेखक एवं कवि आधुनिक युग के हिन्दी दलित साहित्य एवं नारी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार है। उन्होंने पत्र- पत्रिकाओं के माध्यम से दलित एवं नारी समस्या को उजागर करते हुए, दलितों एवं नारियों की समस्याओं को दूर करने का अथक परिश्रम एवं प्रयास किया है। एक सफल सम्पादक के रूप में हिन्दी साहित्य को उन्होंने बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की है। जिससे सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य एवं दलित समाज अनजान नहीं है।

बेचैन जी के साहित्य में नारी की एक अलग ही पहचान है। उसी के आधार पर वे अपनी समस्त रचनाओं में नारी को उसकी परिस्थिति के आधार पर उजागर करते हुए प्रतीत होते हैं। श्यौराज सिंह बेचैन ने स्त्री की आवाज को प्राथमिकता से रखा है। महाड़ सत्याग्रह में महिलाओं की आवाज से प्रेरित होकर डॉ. अंबेडकर ने संविधान में उनकी भागीदारी का वर्णन किया है।

सवर्णवादी लेखक कभी भी दलित महिलाओ या लेखकों को नायकत्व प्रदान कम करते हैं। दलित की बात गैर दलित करते रहे हैं लेकिन उनकी मुक्ति की कामना कम करते हैं। गैर दलित लेखिकाएं दलित महिलाओं का वास्तविक पक्ष साहित्य के केन्द्र में कम रखती हैं। यह पाया जाता है। दलित साहित्यकार नारी की भागीदारी का सवाल साहित्य में रखते हैं। यह उजागर होता है। दलित लेखक संविधान में मिले अधिकारों के तहत समाज में सद्भाव लाना चाहते हैं। जिससे समाज में समरसता स्थापित कर सके।नारी संघर्ष के माध्यम से बेचैन जी ने साहित्य में उन महिलाओं के योगदान को भी याद किया है जिनमें त्याग, बलिदान के बाद भारतीय संविधान में महिलाओं की भागीदारी को प्रदान किया गया। महिलाओं के सफल होने में उन्हें पहले की अपेक्षा ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है। उनके संघर्ष का दायरा घर परिवार समाज हर जगह उन्हें संघर्ष के बाद ही आगे बढ़ने का रास्ता मिलता है। प्रो. बेचैन की नारी सबसे ज्यादा संघर्षशील दिखाई देती है। जो समाज की दशा और दिशा बदलने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है ऐसी साहसी महिलाओं के साहस को प्रो. बेचैन ने अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया है।

प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन ने अपने साहित्य में नारी चेतना के द्वारा समाज में समरसता लाने का प्रयास किया है। समाज में उन्नती के रथ का एक धूरी महिला है जो दायित्वों के द्वारा समाज को बदलने की दिशा में बढ़ती जा रही है। प्रो. बेचैन के साहित्य में जिन नारी पात्रों का चित्रण किया गया है उनका आत्मविश्वास गजब का है। वे मुश्किलो में टूटती नहीं है बल्कि समस्याओं में एक शूरवीर की तरह अपनी उपयोगिता को सिद्ध करती है। यह आने वाले समय की मांग है और परंपरा से चली आ रही नारी विरोधाभासी परंपराओं को तोड़ने का प्रयास किया है। वे जुल्म नहीं सहती है बल्कि कठोरता के साथ उसका जवाब भी देती है। फूलन की बारहमासी ऐसी ही क्रांतिकारी महिला कि यशोगाथा से उनकी लेखनी की धार तेज होती है।

प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में भाषा के नए - नए प्रयोग दिखाई देते हैं। शिल्प की दृष्टि से उनका साहित्य महत्वपूर्ण है। लेखक ने शिल्प के माध्यम से ही आत्मकथा, कविता, कहानीयों, निबंधों, आलोचनाओं में मोहकता, सरलता, स्पष्टता रोचकता मौलिकता को दर्शाया है। साहित्य के शिल्पगत अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि श्यौराज सिंह बेचैन ने भाषा और शैली के प्रति जागरूकता दिखाई है। शिल्प के जो तत्व हैं पात्र एवं चरित्र चित्रण, संवाद-योजना, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, सभी तत्वों की सफल अभिव्यक्ति उनके साहित्य में हुई है। स्त्री पात्रों का मूल्यांकन को प्रधानता देने के लिए कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियां एवं लोकगीतों का समावेश रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है और साहित्य में लोक साहित्य का समावेश एवं आंचलिक बोलियों का चित्रण प्रो. बेचैन ने किया है। इसके साथ उसमें अरबी फारसी, तत्सम, तद्भव, देशज, अंग्रेजी, भोजपुरी, उर्दू आदि शब्दों का चित्रण रचनाओं में प्रभावी भाषा शैली को दर्शाता है। कविताओं और कहानियों में विभिन्न शैलियों का चित्रण हुआ है। उसमें फ्लैशबैक शैली, निबंधात्मक शैली, चित्रात्मक या फोटोग्राफी शैली, वार्तालाप या संवादात्मक शैली, डायरी शैली, लोक कथात्मक शैली, लोकगीतात्मक शैली आदि शैलियां कथा-साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। प्रो. बेचैन ने ग्रामीण एवं शहरी यथार्थ को अपने रचनाओं का विषय बनाया है। साथ ही रचनाओं में शिल्प की विभिन्न विशेषताओं का भी निर्वाह किया गया है जिससे प्रभावोत्पादक बना हुआ है।

*****

साक्षात्कार

➤ **आज श्यौराज सिंह बेचैन दलित विमर्श का एक जाना पहचाना नाम है। साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आपके जीवन के प्रमुख पड़ाव क्या है?**

उत्तर : मेरे जीवन के प्रमुख पड़ाव या मेरी रचनाओं के प्रमुख पड़ाव के बारे में मैंने अपनी आत्मकथा में लिख चुका हूं । मेरा बचपन कैसे गुजरा या मेरी पढ़ाई लिखाई कैसी शुरू हुई ? दुर्लभ या अन्य तरह का संघर्ष रहा है । वैसे तो हमारे देश में वंचित, गरीब वर्ग के बच्चे संघर्ष तो करते ही रहते हैं । मेरा बचपन या मेरे जीवन का संघर्ष दोहरा-तेहरा संघर्ष था । मेरा जन्म वहां हुआ था जहां गरीबी थी लेकिन वह गरीबी और बढ़ गई जब मेरे पिताजी नहीं रहे । मेरा समाज वर्ग भेद में बंटा था। मेरा जन्म अस्पृश्य जाति में हुआ, उसका भी शिकार होना पड़ा । अब उन सबसे जूझते हुए मैंने अपना पहला पड़ाव शिक्षा का हासिल किया, जिसमें मैंने हाईस्कूल तक पहुंचा । हालांकि मैंने कोई उपलब्धि हासिल नहीं की जिससे मेरी जीविका चल सके । हां एक संतोष या ऐसे पायदान पर पहुंच गया कि मैं वहां से आगे बढ़ सकता हूं, ऐसी उम्मीद जगी । मेरे सामने कठिनाइयां बहुत थी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक जैसा कि हर पेरेंट्स बच्चों के पालन-पोषण रहने, खाने, फीस आदि के लिए मेरे पास कोई सहारा नहीं था । मैं साहस करके खड़ा हो गया तो मैं बहुत बड़ा उपहास का पत्र भी बना, जो भी देखा यही कह रहा था कि यह कैसा दु:साहस कर रहा है ? क्योंकि बहुत सारे लोग कहते थे कि जब मेरे बच्चे नियमित स्कूल जाते हैं, व्यवस्थित रूप से पढ़ते हैं, और अधिक समय तक पढ़ते हैं तब वह 10-12 वीं से आगे नहीं बढ़ पाए तो यह बच्चा क्या करेगा ? जो कभी कभार ही स्कूल जाता है ।

➤ **नारी आंदोलन को मैं इस तरह सफल मानता हूं कि यह स्त्री विमर्श के रूप में स्थापित करने में सफल रहा है और स्त्री विमर्श की एक धारा समाज में प्रवाहित हुई तो इसके परिप्रेक्ष्य में मैं आपसे यह जानना चाहूंगा कि साहित्य में स्त्री विमर्श क्या है ? साहित्य में यह कब से प्रारंभ हुआ और वर्तमान में उसकी स्थिति क्या है?**

उत्तर : देखिए इस प्रश्न का सटीक उत्तर देना तो संभव नहीं है, इसका सटीक दावा करना भी उचित नहीं है, क्योंकि इस प्रश्न के लिए हमारे पास सर्वे क्या है ? मोटे तौर पर हम पाते हैं कि जब से हमारे देश में हिंदूकोडबिल या भारतीय संविधान में जब महिलाओं को पुरुषों के समान मत देने का

अधिकार मिला और फिर उन्हें संपत्ति में अधिकार मिला । कई सारे आधुनिक और मानवीय अधिकार संविधान ने लागू किया । उसका असर शिक्षा पर भी पड़ा, महिलाओं में जागरूकता आई शिक्षा में उनका प्रतिशत बढ़ा, बल्कि जो शहर है हम पिछले कई सालों से देख रहे हैं कि समाज में लड़कियों की संख्या लड़कों से कम है । परीक्षाओं के परिणाम आते हैं तो उसमें ज्यादा संख्या उनकी होती है, उनका रिजल्ट भी अच्छा होता है । बौद्धिक क्षेत्र में लड़कियों का जो योगदान हैं, वह लड़कों से अधिक है । उसी के साथ-साथ लड़कियों में नागरिक बोध भी जगा है कि जेंडर के मसले से या लिंग के कारण कोई छोटी नहीं हो जाती । नागरिक में कोई छोटा बड़ा नहीं होता, यह जो विश्वास जगा है तो फिर उन्होंने सवाल उठाना आरंभ कर दिया । जब अभिव्यक्तियां आती हैं तो बहुत सारे रूपों में आती है, उन्हें फिल्मों में, प्रिंट-मीडिया ,इलेक्ट्रॉनिक-मीडिया आदि की तरह कविता, कहानी, साहित्य में विमर्श आदि के रूप में देख सकते हैं और उसे विमर्श में भी देख सकते हैं । जो तेजी से बढ़ा है, पिछले 20 वर्षों में और भी बढ़ता चला जा रहा है । पहले स्त्री विमर्श अलग से नहीं हुआ करता था । अब स्त्रियों के बाकायदा अपने पाठक क्रम में स्त्री विमर्श को शामिल करके आया । स्त्री विमर्श भी उसी तरह से आया जैसे दलित-विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि आए । इसमें एक और महत्वपूर्ण बात है कि पहले जो वेदों के जमाने में केवल ब्राह्मण वर्ग की महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में थी । आजादी के बाद सामान्य घरों से और वंचित घरों की लड़कियां भी इस दिशा में आई । गांव में अगर स्कूल उपलब्ध है तो वह लड़कों के लिए ही उपलब्ध है, लड़कियां शहर जा नहीं सकती हैं इसलिए लड़कियां बौद्धिक रूप से लड़कों से अधिक समर्थ होने के बावजूद वे पिछड़ जाती हैं । मैं उनकी नहीं बल्कि संसाधनों की कमी के कारण लड़कियों के हॉस्टल भी ग्रामीण क्षेत्रों में कम मिलते हैं । जिनकी जरूरत है, जो पढ़ रही है वह अपने विमर्श आदि में आगे आकर भूमिका भी निभा रही है । बहुत सारी लेखिकाएं पैदा हो रही है, बहुत सारी समीक्षक पैदा हो रही है, बहुत सारी प्रवक्ता पैदा हो रही है, और बहुत सारे क्षेत्रों में उनकी पहचान बढ़ रही है । इस तरह से आशाजनक परिवर्तन हो रहा है ।

➤ **श्यौराज सिंह जी परंपरा से चली आ रही नारी की विपन्नता का मूल उद्गम कहां है?**

उत्तर : नारी की विपन्नता का मूल उद्गम कहां है ? इसके बारे में मेरा मानना हैं । जब उन्हें पुरुष से कम समझा गया या समाज व्यवस्था के नियम बनाने वालों ने उन्हें कम माना । बचपन में ही बाल-विवाह करना या निर्णय लेने की शक्ति को छीन लेना । वहीं से नारी की विपन्नता का उद्गम माना जा सकता है ।

➤ **श्यौराज सिंह जी उच्च अध्ययन के दौरान रोहित वेमुला, पायल तड़वी, दर्शन सोलंकी, जैसे अनगिनत दलित बच्चों को शिक्षण-संस्थानों में किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? जिसके कारण जीवन लीला ही समझ कर लेते हैं?**

उत्तर : सबसे बड़ी कठिनाई तो अस्पृश्यता और जाति भेद है । पायल तड़वी एक आदिवासी लड़की थी । उसके साथ की महिला डॉक्टर ने कहा कि तुम मरीज को हाथ नहीं लगा सकती हो । यहाँ उँच-नीच, जातीय ,भेदभाव की भावना ही थी । सीधे शब्दों में कहे तो शिक्षण-संस्थाओं में जाति श्रेष्ठता की मानसिकता बढ़ रही है । उसके लिए जागरूकता की जरूरत है, अन्याय है तो कानून का पालन कराना है और कानून का सहारा लेना चाहिए ।

➤ **श्यौराज सिंह जी आपकी कविताओं का मूल स्वर दलित एवं स्त्री चेतना की भावना से ओत प्रोत है ऐसा क्यों?**

उत्तर : मुझे ऐसा लगता है कि समाज में जो कमजोर पात्र या जो हाशिए पर है, अगर वह उठेगा तो पूरा समाज उठेगा । न कि उसे दिया जाये जो अपच से मर रहा है । कुछ लोग अपच से मार रहे हैं तो कुछ लोग भूख से मर रहे हैं । जो वंचित है जो भूखा है, स्त्रियों एवं दलितों के प्रति मेरा दृष्टिकोण यही है जिसे अतिरिक्त सुविधाएं मिल रही है । उन्हें इसे स्वेच्छा से छोड़ना चाहिए । अपने देश की गरीबी एवं कमजोरी को दूर करना चाहिए, समाज में जो असंतुलन है उससे मुझे दु:ख होता है ।

➤ **एक संस्मरणात्मक लेख में रीमा शुक्ला लिखती है कि मुझे इस आत्मकथा को पढ़कर जो ज्ञान प्राप्त हुआ उसे मेरे दस शिक्षक भी नहीं दे पाए, मेरे अंदर से जातीय अहंकार खत्म हो गया ऐसा क्यों?**

उत्तर : एक बार की बात बताऊं कि मैं शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय लखनऊ से रेलवे स्टेशन जा रहा था और उसके जो हेड थे, वे मुझे अपनी गाड़ी से ले जा रहे थे । रास्ते में एक स्टूडेंट को लिया, जिसे रास्ते में छोड़ना था । वे दोनों आपस में बातें करते हुए, मेरा नाम श्यौराज सिंह बेचैन लिया तो उसके कान खड़े हो गए । उसने कहा सर-सर गाड़ी रोकिए, जो गाड़ी में बैठे हैं वे श्यौराज सिंह बेचैन जी हैं, जिसने मेरा बचपन मेरे कंधों पर लिखा है तो उन्होंने कहा हाँ, तो थोड़ा नीचे उतरिए मैं देख लूं तो मैं फिर गाड़ी से नीचे उतर गया, उसने गौर से देखा और फिर कहना शुरू किया कि मैं बहुत दिनों से सोच रही थी कि ऐसा लिखने वाला कैसा होगा ? तो अलग-अलग छवियां पाठकों के बीच बनती है । लेखक को भी अंदाजा नहीं होता क्या प्रभाव पड़ रहा है ? लेकिन मोटे तौर पर पता चल जाता है कि आपकी मांग बढ़ रही है पर जो प्रतिक्रिया आ रही हैं । कुछ बच्चे कह रहे हैं कि मैं जीवन में बड़ा निराश हो गया था या फिर इसको पढ़ा तो लगा कि मेरे पास बहुत कुछ है । उसके पास कुछ भी नहीं था फिर भी वह यहां तक की यात्रा किया । रीमा शुक्ला ने आत्मकथा को पढ़कर लिखा उसके अंदर से जातीय अहंकार समाप्त हो गया क्योंकि समाज की असली तस्वीर इस आत्मकथा में है जिसे मेरे दस अध्यापक भी नहीं दिखा पाए ।

➤ **एक संस्मरणात्मक लेख में रामकुमार निषाद ने लिखा है कि मेरी पत्नी माया जिनकी किताबों से सरोकार नहीं था फिर भी इस आत्मकथा को पढ़कर पढ़ने में पुनः रुचि पैदा कर दी यह पुस्तक इतनी मोटिवेट कैसे करती है?**

उत्तर : मेरे पड़ोस में ब्रह्म सिंह रहते हैं । उन्होंने मेरी आत्मकथा की दसियों प्रतियों को मंगा कर रखा है और अपने गांव के उन बच्चों को पढ़ने के लिए इस शर्त पर दिया कि पहले इस पुस्तक की कीमत रख दो, फिर इस पुस्तक को ले जाओ । वह हमें यह भी बता रहे थे कि जो बच्चा कहता था कि मैं कैसे पढ़ूं ? मुझे बहुत समस्या है तो वे उस किताब को उसे पढ़ने के लिए दे दिया करते थे । इसको पढ़ने के बाद बताना तुम्हें क्या परेशानी है ? फिर जो

बच्चे चार-पांच साल से पढ़ाई छोड़ चुके थे । वे भी पढ़ना शुरू कर दिया और कई तो सफल भी हुए । अगर एक बच्चे के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मैं सफल हुआ तो मेरा लेखन सफल हुआ । किसी रचना में परिवर्तन या बदलाव लाने में शक्ति नहीं है तो उसके समय को बर्बाद करना है।

➤ **साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में दलित महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार करना यह संविधान की अवमानना है या जड़ता ।**

उत्तर : देखिए ये जड़ता भी है और अवमानना भी है । गैर कानूनी भी है और अमानवीय भी है । किसी के भी साथ अत्याचार करना चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, दलित हो या गैर-दलित कोई हो । दलित स्त्री के साथ बलात्कार करना या गैर-दलित के साथ भी बलात्कार करना कोई मानवीय गुण थोड़ी ही है । किसी के साथ ऐसा व्यवहार करना उचित नहीं है । दलित स्त्री की स्थिति यह है कि दलित स्त्री सामाजिक रूप से कमजोर पाई जाती है और परिवार से भी कमजोर पाई जाती है । वह जातीय, उदंडता, दबंगता की शिकार है । कोई भी जो शिकार करता है वह सबसे कमजोर को पंजा मारता है । जैसे शेर, शेर का शिकार नहीं करता, बल्कि शेर हिरण का शिकार करता है । जब हिरन शेर की स्थिति में आ जाएगा तो शेर उसका शिकार नहीं करेगा । इसलिए यह गलत तो है ही फिर उसके लिए कानून है । सामाजिक जागरूकता बढ़े तो समाज से मुकाबला किया जा सकता है । सिर्फ कानून से बात नहीं बनती है । कानून तब कार्य करता है जब आप कोर्ट-कचहरी में जाते हैं । सामाजिक व्यवहार में हमारे यहां यह परंपरा चल रही है कि यह सब तो सदियों से होता चला आया है । भंवरी देवी के मामले में हमारे जज भी बोल गए कि हमारे जो उच्च जाति के लोग हैं वे नीच जाति के लोगों को छूते तक नहीं है तो बलात्कार कैसे करेंगे ? तो इस तरह की भी धारणा लोगों में पाई जाती है ।

➤ **दलित शिक्षा का आंदोलन दलित नारियों में शिक्षा के उत्थान के लिए क्या कार्य कर रहा है?**

उत्तर : ऐसा कोई आंदोलन उठ खड़ा तो नहीं हुआ है, जो दलित स्त्री की शिक्षा के लिए कार्य कर रहा हो । जिससे कोई बड़ा आंदोलन खड़ा हुआ हो । पारिवारिक, व्यक्तिगत चेतना बढ़ रही है लेकिन इसकी आवश्यकता है । शिक्षा एक आंदोलन की तरह माना जाए और चेतना फैलाई जाए क्योंकि

शिक्षा में समाज आज भी पिछड़ा हुआ है । 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो ।' हां, बाबा साहब के जयंतियों के माध्यम से ज्योतिबा फुले के नाम से जो संगठन बन रहे हैं उसमें नारियों की शिक्षा की बात जरूर हो रही है ।

➤ **आपकी कहानियों में जो महिला पात्र हैं वे सभी स्त्री चेतना एवं साहसी महिलाओं के रूप में वर्णन किया है इसके माध्यम से समाज में क्या संदेश देना चाहते हैं?**

उत्तर : महिला चाहे गरीबी में रही हो या संसाधनों से वंचित रही हो, उसे आगे बढ़ने के लिए साहस और विवेक की जरूरत पड़ेगी । उसे अपने साहस एवं अपनी मेहनत से ही आगे आना है । अपने हक, अधिकार पाने के लिए और पुरुष को भी अपना नजरिया बदलना होगा । इसलिए मैं अपने पात्रों में हिम्मत हार कर ना बैठे ऐसा सोचकर अपने महिला पात्रों में जीवंतता लाने के लिए कोशिश करता हूं ।

➤ **श्यौराज सिंह जी आपकी एक बहुत ही चर्चित कहानी शोध-प्रबंध को एक कालजयी रचना कही जाती है ऐसा क्यों?**

उत्तर : यह शिक्षण-संस्थानों से संबंध रखने वाली कहानी है । स्त्री की जागरूकता ही उसे अपने शोषण के खिलाफ खड़ी करती है । वह उसका डटकर सामना भी करती है जो उसका शोषण करता है । यह कहानी सामयिक भी है और उसे कालजयी भी कहा जा सकता है ।

➤ **सन 1982 में फूलन की बारहमासी आपकी पहली एक लोक मल्हार की पुस्तक थी । उसकी लेखन की प्रेरणा कहां से मिली उसी ने आपको कवि बनाया दलित साहित्यकार के रूप में आप क्या कहना चाहते हैं? आप अपने साहित्य के माध्यम से समाज के किन मुद्दों एवं प्रश्नों को स्थान दिया और क्यों?**

उत्तर : मैं 1980 में जब मैं 12 वीं किया था । उसी दौरान फूलन देवी के साथ जो सामूहिक बलात्कार हुआ था तो वह जंगल या बिहड़ में चली गई । अखबारों में उसकी खबर छपती रहती थी और समाज में भी देखे थे कि स्त्री का उत्पीड़न हो रहा था, तो पता नहीं क्यों मुझे बेचैनी उत्पन्न हुई और मैं गांव में रहता था । वहां लोक साहित्य सुनता, पढ़ता रहता था । ऐसे माहौल में मैं

ढला हुआ था इसलिए मेरे अंदर से लिखने के लिए प्रेरणा उत्पन्न हुई । तब मैं फूलन की बारहमासी लिखी और उसे अपने छात्रवृत्ति के पैसे से छपवा दी ।

➤ **श्यौराज सिंह जी आपने अपनी कविताओं को पत्रिका में छपा हुआ देखने के लिए अपना प्रमाण-पत्र भी दुकान पर गिरवी रखा । ऐसा कैसे हुआ?**

उत्तर : एक बार मेरी कविता दिनमान पत्रिका में छपी थी । उस समय दिनमान एक बड़ी पत्रिका थी उसी समय में एक इंटरव्यू देकर आ रहा था । मेरे पास पैसे नहीं थे तो मैं अपने हाईस्कूल के सर्टिफिकेट को गिरवी रखकर खरीद लिया था । जिसे बाद में मेरे एक मुस्लिम मित्र ने वापस दिलाए, उस समय मेरा मन पत्रिकाओं को खरीदने के लिए बहुत करता था, लेकिन मेरे पास पैसे नहीं होते थे । उस समय मेरे जिले में हंस की चार-पांच प्रतियां आती थी । जिसे मेरे शिक्षक मूलचंद गौतम और शांति यादव आदि खरीदते थे । जिनके घरों में जाकर मैं पढ़ता था उसी समय कमलेश्वर ने गंगा दीप पत्रिका शुरू की थी । मूलचंद गौतम या शांति यादव के घर जाकर या फिर उन पत्रिकाओं को मैं लाइब्रेरी में पढ़ता था । लाइब्रेरी के साथ मेरी यह दिक्कत हुआ करती थी कि मुझे अपनी रोटी की व्यवस्था भी करनी पड़ती थी कि मैं भूखा कब तक पढ़ सकता था । इसलिए मैं प्राय शहर से भाग कर गांव जाकर अपनी रोटी की व्यवस्था करता था । मैं पढ़ना अधिक समय तक चाहता था लेकिन भोजन के लिए भी कुछ चाहिए था । इसलिए मुझे बालमजदूरी करनी पड़ती थी ।

➤ **श्यौराज सिंह जी अपने बारिश के मौसम और चांदनी रात को अपने लिए दु:खदायी कहा है ऐसा कहने का कारण क्या है?**

उत्तर : ऐसा इसलिए की बारिश के मौसम में काम पर नहीं जा पाए थे, तो रोटी कहां से मिले ? और चांदनी रात में मुझे ज्यादा समय तक कार्य करना पड़ता था इसलिए ऐसा मैंने कहा था ।

➤ **ऐसा कहा जाता है कि पुरुष की सफलता के पीछे किसी न किसी महिला का हाथ होता है आपकी सफलता के पीछे किस महिला का हाथ है माताजी या कोई और महिला?**

उत्तर : मैं अपने आप को सफल-ओफल नहीं मानता । लेकिन मेरी पत्नी और मां का योगदान है । मेरे जीवन में मां की भूमिका भी विरोधाभासी रही है ।

क्योंकि उन्हें लगता था कि मै पढ़ाई के कारण कठोर काम नहीं कर सकता हूँ । उन्हें उस समय यह लगता था कि यह मजदूरी करना भी भूल जाएगा । यह भी होता था कि जब मैं पढ़ रहा था तो लोग कहते थे कि पढ़ने का कार्य आराम का कार्य होता है इसलिए मैं मुश्किल कार्य नहीं कर पाऊंगा । आज में जो कुछ हूँ उसे सफलता क्या कहें ? अभी तो काम कर ही रहा हूँ ।

➤ **अभी तक कितने लोगों ने आप पर एम.फिल एवं पीएच. डी. किया है?**

उत्तर : अभी तक तो दस पीएच.डी तो मेरे पास ही रखी है । एम.फिल तो बहुत सारे बच्चों ने किया है । बहुतों का तो बाद में पता चला कि उन्होंने मेरे ऊपर कार्य किया है । एम.फिल तो पंद्रह से बीस बच्चों ने किया है ।

➤ **श्यौराज सिंह जी आपकी कितनी रचनाओं को देशी-विदेशी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है?**

उत्तर : मेरी आत्मकथा जब अंग्रेजी में आने के बाद अमेरिका की यूनिवर्सिटी में पढ़ाई जाती है । चीन में पीएच. डी हो रही है । देश के कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है । लखनऊ, इलाहाबाद, नांदेड़, रांची, डॉ. शकुंतला मिश्रा ,हैदराबाद, जेएनयू, दिल्ली विश्वविद्यालय में भी आत्मकथा पढ़ाई जाती है ।

➤ **एक साक्षात्कार के दौरान आपने बताया था की आत्मकथा का दूसरा एवं तीसरा भाग डायरियों के संकलन और साक्षात्कारों की एक लंबी श्रृंखला भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है । वह प्रकाशित होकर पाठकों तक कब तक आ रही है?**

उत्तर : देखिए एक-एक करके ही काम हो पाएगा । मैं पिछले दिनों विभागाध्यक्ष था तो बहुत सारी व्यस्तताएं थी । मैं पुस्तक मेला में आत्मकथा को लाते-लाते नहीं ला पाया । जो फरवरी 2023 में प्रगति मैदान में लगा था । जो कि आत्मकथा टाइप होकर आ रही थी । मैं अपनी तरह से एक बार पुन: देख लेना चाहता था । क्योंकि मैं संतुष्ट नहीं था हालाकि इस दौरान मेरी कई किताबें आई । जैसे मीडिया में लोकतंत्र की तलाश, हाथ तो उग आते हैं, मूक नायक और अस्मिता संघर्ष के सौ साल आदि प्रकाशित हुई ।

➤ **श्यौराज सिंह जी बिना भाषा की सीमा के आप यह बताइए की नारी-विमर्श का साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा?**

उत्तर : नारी-विमर्श का साहित्य पर यह प्रभाव पड़ा कि साहित्य में नारी संबंधी ज्ञान, नारी संबंधी समस्या, नारी संबंधी विषय, नारी संबंधित दुख दर्द आए । नारियों के बारे में जो बातें पुरुष नहीं जानते थे, वे बातें भी आई । जैसा की नारियों ने कहा कि उनके जीवन को पुरुष कितना जानता है । वह बच्चा जनती है, वह तकलीफ उठाती है, पुरुष उसे महसूस नहीं करता है । समाज में वह दोहरा-तेहरा योगदान करती है । अब वे उसे व्यक्त करती है । अब उनके प्रति संवेदनशीलता बढ़ रही है । समाज में उनके प्रति जिम्मेदारी और कर्तव्य परायणता बढ़ रही है और बढ़नी भी चाहिए । पुरुष को उसकी परवाह ही नहीं रही है और जब वह एहसास करा रही है तो करना पड़ रहा है । इस तरह से समाज में संतुलन बढ़ रहा है और वह अब अपनी समस्याओं का दस्तावेजीकरण कर रही है । अब आने वाली नस्लों को काम आएगा । अब बहुत सारी स्त्रियां पुरुषों से आगे निकलकर साहित्य में योगदान कर रही है । उसी में एक नाम गीता पांडे का भी है , जिनकी पहचान नेशनल और इंटरनेशनल बनी ।

➤ **दलित नारी इतिहास पर अभी तक समुचित कार्य नहीं हुआ है । इस दिशा में क्या प्रगति हो रही है?**

उत्तर : दलित नारियों का इतिहास दलित नारियों को ही बनाना पड़ेगा । बाबा साहेब के आंदोलन में मराठी स्त्रियां आई उन्होंने लिखा हमने भी इतिहास रचा । उसमें सैकड़ो स्त्रियां जो आंदोलन में थी और उससे प्रेरित होकर अपने बच्चों को शिक्षित किया । चेतना फैलाई और लेखिकाएं बनी । अपनी आत्मकथा लिखी । इधर भी इतिहास बन ही रहा है । हमारे हिंदी क्षेत्र में राजनीतिक रुझान थोड़ा ज्यादा बढ़ा है । साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रुझान कम बढ़ा जिसकी आवश्यकता है । राजनीतिक क्षेत्र में मायावती एवं मीरा कुमार जैसी बहुत सारी महिलाएं इस क्षेत्र में आई । लेकिन उन्होंने साहित्य एवं संस्कृति क्षेत्र में बड़ा योगदान नहीं दिया । शिक्षा एवं साहित्यकारों में दलित एवं गैर दलितों, पिछड़ों सभी क्षेत्रों की महिलाएं अपनी आत्मकथा लेकर आई जिसमें कौशल्या वैसंती, कौशल पवार, रजनी तिलक, सुमित्रा मेहरौली, रजत रानी मीनू ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया । इधर जब महिलाओं ने लिखना शुरू किया तो बहुत सारी रचनाएं आई । नई-

नई शोध छात्राएं भी इस दिशा में प्रवेश किया और मूल्यांकन कर रही है । रचनात्मक एवं आलोचनात्मक दोनों क्षेत्रों में वृद्धि हो रही है । जब आलोचनात्मक कार्य बढ़ता है तो रचनात्मक समझ भी बढ़ती है तब अपनी अभिव्यक्ति की क्षमता भी बढ़ती है ।

➤ **कुछ साहित्यकार कहते हैं कि अब पाठक कम हो गए हैं जबकि दलित साहित्य के बारे में ठीक उल्टा है । यहां पाठक वर्ग भी बढ़ रहा है ऐसा क्यों?**

उत्तर : ऐसा इसलिए है कि इधर लंबे समय तक या सदियों तक पढ़ने नहीं दिया गया स्कूल जाने नहीं दिया गया, उनमें भूख बढ़ रही थी । लिखने का मौका नहीं मिला,बोलने का मौका नहीं मिला तो वह जब निकलती है तो विस्फोट करती है इसलिए पढ़ने लिखने का विस्फोट हो रहा है । एक लंबे समय तक इसकी आवश्यकता रहती है । ऐसा नहीं है कि डिजिटल तकनीक के बढ़ने से पाठक खत्म हो जाएंगे । रसिया, अमेरिका, तकनीक में बहुत पहले से आगे हैं । ऐसा नहीं है कि यहां साहित्य की कमी है । साहित्य कितना भी नेट से जुड़ जाए, प्रिंट की अहमियत रहेगी, बच्चा पढ़ तो रहा है चाहे नेट पर पड़े या बुक में और लिख भी रहा है चाहे तकनीक पर लिखे या कॉपी पर । तकनीक से परिवर्तन तो होता है । पहले मैं भी कंप्यूटर के नाम से चौंका करता था लेकिन धीरे-धीरे उस पर काम करने लगा, तकनीक मदद भी करती है । सन् 2000 में जब सहारा पेपर में मुझे लिखने का मौका मिला था । तो पहले मैं हाथ से लिखता था फिर उसको टाइप करवाता था । कई बार तो टाइप के बाद भी गलती मिलती थी तो फिर भाग कर टाइप वाले के पास जाता था फिर एक दिन मेरे मित्र चंद्रभान प्रसादने मुझे एक कंप्यूटर दिला दिया फिर मुझे यह फायदा हुआ कि गलती होने पर तुरंत ठीक कर लेता था इसलिए तकनीक का उपयोग जरूरी है ।

➤ **आपका जन्म एक दलित परिवार में हुआ यह स्वाभाविक है कि दलित आज भी शिक्षा और रोटी आदि के प्रश्नों से ऊपर नहीं उठ पाए हैं तो आपकी शैक्षिक यात्रा कैसी रही?**

उत्तर : ऐसा है कि सभी दलित एक से नहीं है । बहुत से दलितों को आजादी के समय ही मौका मिल गया था । जगजीवन राम, डॉ. भीमराव अंबेडकर जी तो पढ़े-लिखे ही थे । उनकी पीढ़ी भी पढ़ी लिखी थी । जो कि अंग्रेजो के रहते हुए भी शिक्षित थी । उस समय छुआछूत समाप्त नहीं हुआ था क्योंकि

वे नहीं चाहते थे कि यहां के सवर्ण लोग उससे नाराज हो। इसलिए बाबा साहब ने उन्हें बहिष्कृत जाति ही कहा है। क्योंकि वह सारे साधनों से वंचित रहे, जीविका के लिए ऐसे काम करने पड़े, जिसे कोई करना नहीं चाहता था। जैसे मुर्दा पशु के चमड़े निकलना या झाड़ लगाना या मलिन कार्य करना जिसमें ना पैसा था ना सम्मान था। मैं अपने बारे में बता ही चुका हूं कि जब मेरे पिताजी नहीं रहे। उनके पास छोटे-छोटे जमीन के टुकड़े थे, जिसमें मेरे तीन बाबा दो अंधे, एक लंगड़े थे। तो बेचारे क्या करते हैं ? उनके बारे में मैं विस्तार से बता ही चुका हूं। उसी में से निकल-निकला कर मैं यहां तक आया हूं।

➤ **श्यौराज सिंह जी पढ़ने के दौरान आपको किन विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?**

उत्तर : पढ़ने के दौरान पहली कठिनाई तो रोटी की थी। जब मुझे पढ़ाई में समय देना है तो मेहनत मजदूरी कैसे करूंगा ? अगर मैं मेहनत मजदूरी नहीं करूंगा तो मुझे खाने पहनने के लिए पैसा कहां से आएगा ? मुझे कहीं से फंडिंग या छात्रवृत्ति आदि की व्यवस्था मेरे पास नहीं थी। अब हर बच्चे को हमारा संविधान कहता है कि 14 वर्ष तक के बच्चे को शोषण या किसी काम में नहीं लगाया जा सकता। यहां तो मैं 14 वर्ष तक लगातार शोषण का शिकार ही रहा। मैं तो 15-16 वर्ष में ही स्कूल जा सका हूं उसके बाद भी मुझे रोटी की व्यवस्था करना पड़ा पड़ता था। इसलिए मेरे लिए तो यह संकट का समय था। मैं कई बार तो कुपोषण का शिकार भी हुआ था।

➤ **आपने आत्मकथा में लिखा है कि छात्रवृत्ति भी कभी समय से नहीं मिलती थी इसका क्या कारण हो सकता है?**

उत्तर : छात्रवृत्ति देने वाले जो क्लर्क आदि होते थे। वे सब यह समझते थे कि वह अपने घर से देते हैं इसलिए वह उल्टी सीधी गालियां भी देते थे। अगर शिक्षक से बात करते थे तो वह कहते थे कि तुम वजीफा के लिए पढ़ते हो। मदद से ज्यादा गलियां या प्रताड़ना मिल जाती थी। उन सबसे गुजर कर आना होता था। वह ऐसा व्यवहार एक बच्चे के लिए नहीं बल्कि हजारों बच्चों के साथ ऐसा ही करते थे। कई बच्चे तो सुसाइड भी कर लेते थे, तो

कई स्कूल छोड़कर चले जाते थे । यह बड़ी विडंबना है कि शिक्षक बच्चों को पास बुलाओ, लेकिन जाति भेद के कारण शिक्षक बच्चों को कहते दूर भागो । ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा को देखो तो बच्चा पढ़ने के लिए स्कूल जाता है लेकिन शिक्षक कहता है कि झाड़ू लगाओ । ऐसे अनेक उदाहरण या किस्से है । जिसे वंचित वर्ग के बच्चे झेलते हैं । ऐसी ही एक घटना डॉ. धर्मवीर के साथ भी हुआ । जब ब्राह्मण शिक्षक को पता चला कि यह बच्चा चमार जाति का है तो उनके हाथों से गिटार छीन लिया था और वहां से भगा दिया । एक बार धर्मवीर जी ने मुझे रास्ते से गुजरते हुए उस ब्राहमण शिक्षक का घर भी दिखाया था ।

➤ **क्या आज के शिक्षक भी गुरु द्रोणाचार्य की तरह एकलव्य का अंगूठा काट रहे हैं?**

उत्तर : ऐसा अन्याय वंचित वर्ग के बच्चों के साथ आज भी हो रहा है । जहां सरकार ने दलित, पिछड़े, आदिवासियों को शिक्षा में प्रतिनिधित्व दे दिया है या जहां शिक्षक है । वहां थोड़ा सा संतुलन है और जहां प्रतिनिधित्व नहीं है । वहां दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों को कम अंक दिए जाते हैं और पूर्वाग्रहों से यह माना जाता है कि ये कम योग्य होते हैं, भले ही अंक ज्यादा क्यों न हों ? ऐसी धारणा उनमें पाई जाती है ।

➤ **आप दलित छात्र के रूप में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों के कुछ संस्मरण बताएं ।**

उत्तर : अब तो मैं कुछ कह नहीं सकता । लेकिन मेरे समय में बहुत दिक्कत थी । उनके माध्यम से जो छात्रवृत्ति मिलती थी । उसमें अफसर एवं कर्मचारी लोग परेशान किया करते थे ।उसमें कुछ हिस्सा भी माँगा करते थे कि उन्हें कुछ खिला-पिला दो, तब हम तुम्हें देंगे । कभी तो यह कह देते की अभी नहीं आया हैं । मेरे जैसा व्यक्ति जब लड़ जाता तो और ज्यादा परेशान किया जाता था । व्यवस्था ऐसा शिकार बनती है कि शेड्यूल कास्ट के कर्मचारी भी उसी तरह का व्यवहार करते थे । वह भी व्यवस्था के अंग बन जाते थे ।

➤ **श्यौराज सिंह जी नारी पात्रों के मूल्यांकन को आप किस नजरिए से देखते हैं?**

उत्तर : नारी पात्रों को मैं सशक्त पात्रों के रूप में देखना चाहता हूं। वे भी उन सवर्ण महिलाओं के समान हक ,अधिकार के लिए लड़ते एवं संघर्ष करते हुए दिखाई दे। जहां उन्हें अब तक स्थान नहीं मिला है। जैसे मीडिया, शिक्षा, शासन, प्रशासन और साहित्य में भागीदारी नहीं मिली है। जब ऐसा अवसर उन्हें भी मिल जाएगा तो उनका मूल्यांकन पूरा हुआ माना जा सकता है।

*****